'चंद्रगुप्त' नाटक में नायकत्व के प्रश्न को इस लिए उठाया जाता है कि इस नाटक का नाम जिस पात्र के आधार पर है, वह पात्र नाटक के क्रिया-व्यापार में सिद्धांत और व्यवहार, विचार और प्रतिपादन दोनों स्तरों पर अपनी श्रेष्ठता प्रमाणित नहीं कर पाता।

भरत मुनि ने 'नाट्यशास्त्र' में नायक के दस गुणों की चर्चा की है कि उसे जननेता, विनम्रता, त्याग, मधुरता, अभिजात्यकुलोत्पन्न, वीर, शास्त्रज्ञता, शीलवान, दृढ़प्रतिज्ञ, कलाप्रेमी आदि गुणों से उसे लैस होना चाहिए।

चंद्रगुप्त और चाणक्य दोनों ही धीरोदात्त-चरित्र हैं। नाट्यशास्त्र के अनुसार

नायक चार प्रकार के होते हैं — धीरोदात्त, धीर ललित, धीर प्रशांत, और धीरोद्धत।

चंद्रगुप्त और चाणक्य दोनों धीरोदात्त एवं उच्च कुलोत्पन्न हैं, इसलिए नायक होने की क्षमता दोनों में है। जहाँ तक विनम्रता, कला-प्रेम, मधुरता का ख्याल है ये गुण चाणक्य में नहीं है, ~~इसलिए नायकत्व पाने के दौर में वह~~ लेकिन अन्य गुण उसमें मौजूद है इसलिए नायकत्व पाने के दौर में वह भी शामिल है।

यदि फल प्राप्ति के लिहाज से चंद्रगुप्त नायक का मूल्यांकन करें तो पायेंगे कि प्रत्यक्ष जो फल दिखाई पड़ रहे हैं, जैसे नंदवंश का पतन, सिकंदर एवं सेल्यूकस की पराजय, निष्कंटक आर्यावर्त के सम्राट पद की प्राप्ति और कार्नेलिया से विवाह — इन सभी का उपभोक्ता चंद्रगुप्त है।

पुरुषार्थों की प्राप्ति के आधार पर चूँकि चंद्रगुप्त को काम और अर्थ की प्राप्ति होती है, इसलिए चंद्रगुप्त ही नायक लगता है, लेकिन यदि चंद्रगुप्त नायक के प्रयोजन को देखते हुए इस नाटक के फल

का निर्धारण किया जाए तो ये फल हैं— ग्रीक-संस्कृति पर भारतीय संस्कृति का विजय। छोटे-छोटे गणराज्यों को मिलाकर अखंड आर्यावर्त का निर्माण तथा भारत में राष्ट्रीय चेतना का निर्माण। इन सभी फलों का उपभोक्ता चाणक्य है। उसी के प्रयास से नाटक के सभी क्रिया-व्यापार गतिशील होते हैं। चंद्रगुप्त का काम तो सिर्फ यज्ञ में लकड़ी डालने का है। कार्नेलिया से चंद्रगुप्त के विवाह को यदि फल मान लिया जाए तो यह इस अर्थ में चंद्रगुप्त की उपलब्धि नहीं है कि कार्नेलिया उसकी पत्नी बन जाती है, बल्कि इस अर्थ में उपलब्धि है कि चाणक्य ने चंद्रगुप्त से कार्नेलिया का संबंध स्थापित कर दो लड़ते हुए देशों को एकता के सूत्र में बाँधा। यह यूनान और भारत के बीच में एक दृढ़ संधि-पत्र है। इसका काम है दो संस्कृतियों के बीच सम्मिलन स्थापित कर पाना। इस सांस्कृतिक संधि के प्रयोजन से भी चंद्रगुप्त नहीं चाणक्य जुड़ा है।

नाटकीय संघर्ष के आधार पर हम नायकत्व का विचार करते हैं तो वहाँ भी चाणक्य बड़ा दावेदार बनता है।

यह चाणक्य ही है जो नाटक के पहले ही पृष्ठ पर चंद्रगुप्त और सिंहरण को आसन्न खतरा से आगाह करता है। वह कहता है कि, "म्लेच्छ साम्राज्य बना रहे हैं और आर्य जाति पतन के कगार पर खड़ी एक धक्के की राह देख रही है।" चाणक्य की चिंता वैयक्तिक नहीं, राष्ट्रीय, सामाजिक है। चाहे नंद का पतन हो, या सिकंदर-सेल्यूकस की पराजय या पर्वतेश्वर और आंभिक को राष्ट्रीय धारा से जोड़ने का सवाल हो सब जगह वो वही अगुवाई करता है। चंद्रगुप्त तो मात्र ~~एक~~ उसके इशारे पर नाचने वाली कठपुतली है या शतरंज का मोहरा। वह चाणक्य का एक अनुगत पात्र है।

एक जगह चंद्रगुप्त चाणक्य से स्वतंत्र होकर अपने स्वतंत्र व्यक्तित्व का निर्धारण करता हुआ दिखता है। सरल बालकोचित भावुकता में बहकर वह अपने माता-पिता के अपमान का बदला चाणक्य को अपमानित करके लेता है। सिंहरण से अलग होकर अपनी सेना बनाता है, लेकिन उसके इस कार्य से उसका व्यक्तित्व जितना ऊपर उठता नहीं उतना गिरता है। जिस चाणक्य ने चंद्रगुप्त की प्राण रक्षा के

लिए ही विजयोत्सव का आयोजन न करने दिया, उसी चाणक्य का अपमान चंद्रगुप्त की चारित्रिक कमजोरी को सामने लाता है। इससे यह साफ हो जाता है कि चंद्रगुप्त में चाणक्य से अलग होकर स्वतंत्र एवं निर्विवाद निर्णय लेने की क्षमता नहीं है।

कोई इस आधार पर चंद्रगुप्त को नायक ठहरा सकता है कि चंद्रगुप्त का कृतित्व विलक्षण है। वह चाणक्य को बंदीगृह से मुक्त दिलाता है। कल्याणी की रक्षा बाघ से करता है, सिकंदर को घायल करके उसके शिविर से भाग निकलता है। फिलिप्स को द्वंद्व युद्ध में पराजित करता है। उसके अद्वितीय वीरता को देखकर दाण्ड्यायन भी उसके आर्यावर्त के भावी सम्राट होने की भविष्यवाणी करता है। चाणक्य की योजना को सही अंजाम देने वाला योद्धा है। वह हर संघर्ष में अपराजेय है। इसलिए उसे नायक होना ही चाहिए। किंतु यह नहीं भूलना चाहिए कि चंद्रगुप्त में कई कमजोरियाँ भी हैं। जैसे- महान वीर होते हुए भी वह चलते-चलते मूर्छित हो जाता है। नारियों को लेकर उसमें बड़ी दुर्बलता है। वह कल्याणी, मालविका

कार्नेलिया सबकी ओर आकृष्ट होता है। इसके विपरीत चाणक्य अपनी कृषकाया में भी अपार साहस, असीम आत्मविश्वास पाले हुए है। वह एक दुर्दमनीय व्यक्तित्व का धनी है। वह जो सोचता है, घटनाएँ उसी के अनुरूप घटित होती हैं। वह साक्षात काल पुरुष है।

पात्रों द्वारा की गई प्रतिज्ञा को चारित्रिक श्रेष्ठता का एक प्रतिमान माना जाए तो चंद्रगुप्त इस नाटक में कई महत्वपूर्ण प्रतिज्ञा करता है जैसे- "गुरुदेव, विश्वास रखिए; यह सब कुछ नहीं होने पायेगा। यह चंद्रगुप्त आपके चरणों की शपथ पूर्वक प्रतिज्ञा करता है कि यवन यहाँ कुछ न कर सकेंगे।" किंतु ऐसी प्रतिज्ञा तो चाणक्य भी करता है। नंद वंश की नाश के लिए चाणक्य शिखा खोल देता है और कहता है कि, "यह शिखा (शिखा काल सर्पिणी है) यह नंद कुल के निःशेष से ही शांत होगी। उसकी दूसरी प्रतिज्ञा है कि, "न तो किसी से मैं दया माँगूँगा, और न ही अवसर और अधिकार मिलने पर किसी पर दया करूंगा।"

चंद्रगुप्त नाटक के अभिकथ प्रतिपाद्य के आधार पर उसका प्रयोजन भारतीय संस्कृति के उदात्त मानवीय पक्ष को उजागर करना और राष्ट्रीय चेतना का प्रसार करना। चाणक्य इन दोनों उद्देश्यों को व्यावहारिक रूप देता है। राष्ट्रीय एकत्व का भाव भी चंद्रगुप्त एवं सिंहरण में वही भरता है। इसलिए चाणक्य ही इस नाटक का अंतत: नायक ठहरता है। चंद्रगुप्त अपने को मागध के रूप में परिचय देता है तो वह नायक का अधिकारी कैसे हो सकता है।

अत: फल, संघर्ष, नाटकीय प्रतिपाद्य, नाटककार के प्रयोजन, नायकों के शास्त्रीय गुण — सभी आधारों पर 'चंद्रगुप्त' नाटक का नायक चाणक्य है।